श्री गणपती वरील पर्दे पद ६२

(राग: यमन जिल्हा - ताल: धुमाळी)

गजवदन चित्प्रभू लीला। विजयप्रद हो या बालां प्रभु भूपाला आणि विश्वाला।।धु.।। वाग्रत्नालंकृत माला। जगपोषक या श्री प्रभुला नमुनि पदकमलां कण्ठी घाला।।१।। मग नमूं स्फूर्ति चिद्धिंबा। व्यंकं मा जयतु जगदम्बा जनिन हेरम्बा जी निरालम्बा।।२।। शारदा मंगलारंभा। बिंबाधर पृथुल नितम्बा हेमकुचकुंभा विधृत स्वर तुम्बा।।३।। तो दत्त ती प्रभु सत्ता। गणपती सरस्वति माता। मार्ताण्ड प्रभा सम समता। सुख स्वात्मानंदी डुलता। नाचती तकता थैत्तततिगण झुण झुण तत किट किट धेता।।४।।